भजन

तर्ज- पन्ना रूहों का निजधाम है

सतगुरू बनके हैं आए पिया,रूहों पे मेहर करी मेहरबान

पहचान सरकार श्री जी की,समझे रुहें जो हैं असल पिया

1 निसवत इश्क और मेहर है क्या

इलम वाहेदत और खिलवत है क्या-2

भेद वाणी का जाहिर किया,अभियान जागनी रोशन किया

पहचान ,,,,

2 जाग्रत बुद्ध और निजबुद्ध बताकर,

रूह को दुनिया से बेशक किया-2

टीका वाणी देकर साथ को,पर्दा झूठ का उड़ा है दिया

पहचान,,

3 त्रैगुण फांस के जो फंद पड़े थे

निरवारे मेरे सरकार-2

जब चलाई सत की हवा,पर्दा ष्ण का उड़ा है दिया

पहचान,,,

4 प्रेम सेवा का भेद है क्या

अर्पण खुद होके दिखाया यहाँ-2

रहनी पे पहले खुद वोह चले,धाम का चितवन भी दिया

पहचान,,,,